परिचयः जिला राजगढ़

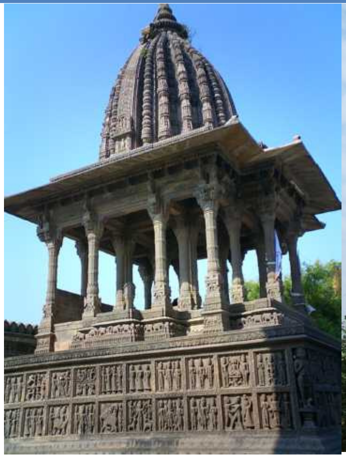

1.1 जिला परिचय

इतिहासः—राजगढ़ जिसका वास्तविक नाम झन्झनीपुर हुआ करता था, जिले के रूप में, मई 1948 में मध्य भारत के गठन के बाद अस्तित्व में आया। इसके पूर्व जिले का क्षेत्र राजगढ़, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर सम्पूर्ण रूप से और देवास जूनियर, देवास सीनियर और इन्दौर राज्य में आंशिक रूप से सम्मिलित था। राजगढ़ मध्यकालीन राज्य जो कि उमठ राजपूतों के द्वारा शासित और महान परमार राजगढ़ मध्यकालीन उमठ राजपूतो द्वारा शासित राज्य का मुख्यालय और परमार वंश की एक शाखा हुआ करता था। कालान्तर में यह देहली सुल्तान और मुगल साम्राज्य की जागीर के रूप में रहा। इस राज्य की पहली राजधानी दुपाड़िया थी जो कि वर्तमान में शाजापुर जिले का एक भाग है। बाद में राजधानी राजगढ़ से 19 कि.मी. दूर डूंगरपुर बनी, फिर राजधानी डूंगरपुर से बदलकर नरसिंहगढ़ से पश्चिम दिशा में 19 कि.मी की दूरी पर स्थित रतनपूर हो गई। तत्कालीन शासक मोहन सिंह ने मुगल सेना की आवाजाही से होने वाले व्यवधानो को ध्यान में रखकर वर्तमान राजगढ़ को 1640 में भीलो से जीत लिया और वर्ष 1645 में अपने मुख्यालय को यहां स्थानांतरित करते हुए इसे राजगढ़ नाम दिया।

वर्तमान में जिला 7 तहसील एवं 8 उप—तहसीले, 6 जनपद पंचायतें, 627 ग्राम पंचायतों के रूप में गठित है। जिले में 13 शहरी क्षेत्र है, राजगढ़ जिला उत्तर में गुना, दक्षिण में शाजापुर, पूर्व में सीहोर व विदिशा और पश्चिम में राजस्थान राज्य के झालावाड़ जिले से घिरा हुआ है।

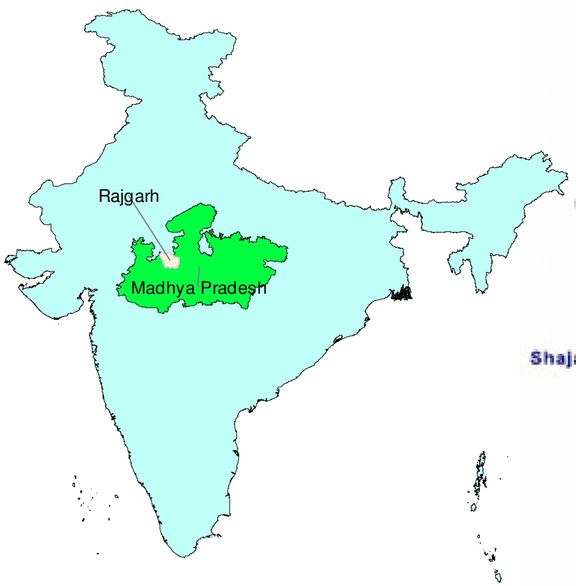

1.2 जिले में तुलनात्मक विकास के संकेतांकः—

भौगोलिक स्थितिः—राजगढ़ जिला मालवा के पठार के उत्तरी भाग में स्थित है जिले का विस्तार 23.28 डिग्री से 24.18 डिग्री उत्तरी अक्षांश के बीच और 76.11 डिग्री से 72.20 डिग्री देशान्तर पूर्व के बीच है। जिले की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 390 मीटर है। जिले में औसत वर्षा 800 से 1200 मि.मी. होती है परंतु विगत पांच वर्षो में वर्षा का औसत 800 मि.मी. से कम रहा है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 6163 वर्ग

कि.मी. है जिसमें 176.36 वर्ग कि.मी. (4%) वन क्षेत्र है। जिले का दो तिहाई भू–भाग पहाड़ी और असमतल है। जिले की भूमि को मुख्य रूप से तीन भागो में विभाजित किया जा सकता है जिनमें राजगढ़ और खिलचीपुर की अधिकांश भूमि पथरीली ओर कम उपजाऊ है। ब्यावरा और नरसिंहगढ़ का थोड़ा भाग पहाड़ी होकर अधिकतर भाग समतल एवं उपजाऊ है। सारंगपुर और जीरापुर तहसील का भू–भाग समतल होकर अधिक उपजाऊ है।

राजगढ़ जिले की मुख्य नदियाँ पार्वती, कालीसिंध, नेवज और घोडापछाड़ हैं जो जिले के पूर्व से पश्चिम मध्य और उत्तर में बहती हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक इन नदियो में पानी वर्ष भर रहा करता था। छोटी नदियो में गाड़गंगा, अजनार, छापी और दूधी का नाम उल्लेखनीय है।

जनांकिकीय जानकारीः—वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 12.54 लाख थी जो 2.62% वार्षिक वृद्धि की दर से बढकर वर्तमान में लगभग 15.16 लाख हो गई है। जिले की अधिकांश जनसंख्या (82.67%) ग्रामीण क्षेत्र में और मात्र 17.33% शहरी क्षेत्रो में निवास करती है। जिले की कुल जनसंख्या मे लगभग 18% अनुसूचित जाति एवं 3.3% अनुसूचित जनजाति सम्मिलित है। जिले में लिंग अनुपात की स्थिति राज्य के औसत 919 स्त्री प्रति हजार पुरुष के विरूद्ध 932 व 6 वर्ष से कम आयु समूह में राज्य 932 स्त्री प्रति हजार पुरुष के विरूद्ध 936 हैं। ग्रामीण क्षेत्र में यह अनुपात राज्य का 939 व राजगढ़ का 941 स्त्री प्रति हजार पुरुष हैं।

Demographic Indicators	Census 2001
1. TOTAL POPULATION	1254085
(A) MALES	649106
(B) FEMALES	604979
(C) RURAL	1036763
(D) URBAN	217322
(E) SC	218706
(F) ST	47370
2. TOTAL LITERACY	54.05%
(A) MALES (7 YRS & ABOVE)	69.53%
(B) FEMALES (7 YRS & ABOVE)	37.37%
3. DECENNIAL GROWTH RATE	26.24%
4. POPULATION DENSITY (PER SQR. KM.)	204

वर्ष 2002–03 के BPL सर्वे के अनुसार जिले की जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत भाग गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करता है। जिले में विकासखण्ड वार BPL परिवारों का वितरण नीचे दिये गये ग्राफ में दर्शाया गया है।

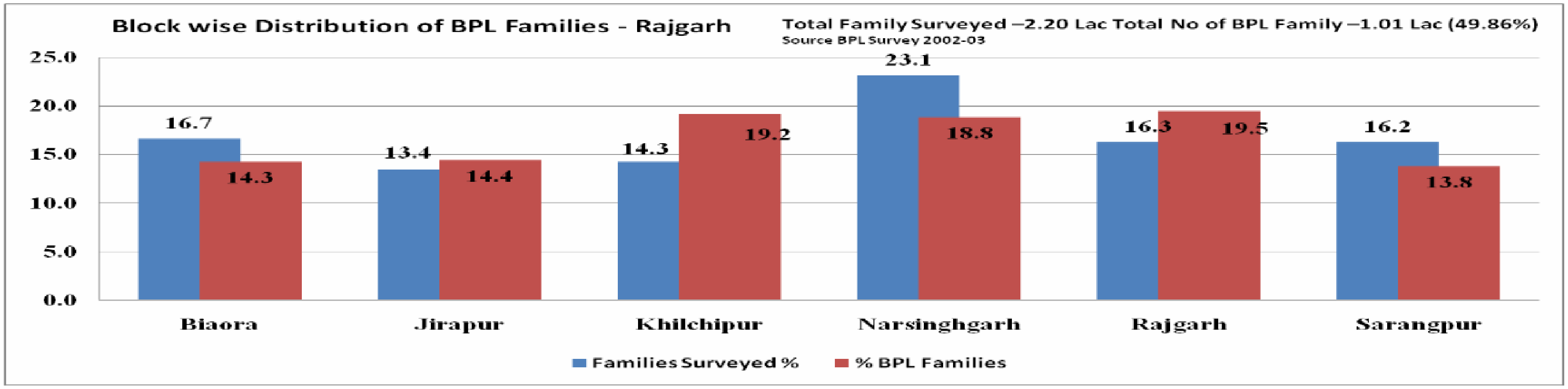

शिक्षा एवं साक्षरता:– राजगढ़ जिले में औपचारिक शिक्षा की शुरूआत स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्ष पूर्व हो चुकी थी। वर्ष 1886 में राजगढ़ और ब्यावरा में दो प्राथमिक स्कूल की शुरूआत की गई। वर्ष 1951 में सकल पंहुच अनुपात (Gross Access Ratio) 12.74% से बढकर वर्ष 1994 में 45.6% और वर्ष 1995 से जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन के साथ GAR 95% पर पहुँच गया। वर्तमान में जिले की कुल बसावटो 1913 में 1870 बसावटो के लिये 1 कि.मी. दायरे में प्राथमिक शाला की सुविधा उपलब्ध है।

IPMS 2008–09 द्वारा जारी आंकडो के आधार पर जिले का GER 105.12% व माध्यमिक स्तर पर 100.94% दर्ज किया गया है। प्राथमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं का NER 99.5% है जिससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में लिंग भेद में कमी आई है। इसी तरह माध्यमिक स्तर पर NER 99% जिसमे बालक 99.4% व बालिका 98.8% है जिसका मुख्य कारण अभिभावकों में अपने बच्चो के लिये असुरक्षा का भाव और जिले में प्रचलित बाल विवाह की दर होना है। Cohort अध्ययन वर्ष 2006–07 के अनुसार जिले में प्राथमिक स्तर (1 से 5) के लिये कुल ठहराव दर (Retention Rate) मात्र 71.37% जिसमें बालक 73.87 व बालिका 68.49 है व माध्यमिक स्तर (6 से 8) के लिये कुल ठहराव की दर 84.1% है जिसमें बालक 89.86 व बालिका 74.57 है।

जिले के प्राथमिक स्कूलो के टीचर की कुल संख्या 4315 है जिसका 98.86% व्यवसायिक शिक्षा जिसमें DEd, BEd व MEd सम्मिलित है। वही कुल टीचर में से महिला टीचर का प्रतिशत 32.72% है। जो कि राज्य के औसत से अधिक है। इसी प्रकार माध्यमिक स्कूल के कुल 1941 टीचर में से 97.73% टीचर व्यवसायिक शिक्षा (DEd, BEd, MEd) प्राप्त है व महिला टीचर का प्रतिशत 42.91% है जो कि बालिका शिक्षा प्रोत्साहन के लिये महत्वपूर्ण घटक है।

सम्पूर्ण जिले के लिये प्राथमिक शाला में औसत शिक्षक विद्यार्थी अनुपात मानक अनुपात जो कि 1:40 है से थोडा ज्यादा होकर लगभग 1 : 43 है। जबकि माध्यमिक शाला में यह अनुपात संतोषजनक होकर लगभग 1 : 28 है। प्राथमिक शाला स्तर पर PTR क्षैत्रीय स्तर पर अधिक भिन्नता रखता है इस हेतु युक्तियुक्तकरण की प्रक्रिया सम्पन्न कर समान वितरण सुनिश्चित किया जा रहा है।

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की साक्षरता की दर 54.05% के साथ मध्यप्रदेश के 48 जिलो में राजगढ़ का 39 वां स्थान है। 1991 से 2001 के दशक में जिले में प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम और सम्पुर्ण साक्षरता अभियान के सफल क्रियान्वयन से राज्य और देश की तुलना में साक्षरता दर में अधिक वृद्धि दर्ज (जिला – 22.24%, राज्य–19.44%, देश–13.17) की गई। इस अवधि में विशेष रूप से महिला साक्षरता दर में अधिक वृद्धि देखने को मिली है। विगत वर्षो से क्रियान्वित सर्व शिक्षा अभियान के सकारात्मक प्रभावो से कुल साक्षरता दर की स्थिति में महत्वपूर्ण होना अपेक्षित है। फिर भी 14 वर्ष से अधिक के आयु समूह में साक्षरता हेतु अधिकाधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। साक्षरता के क्षेत्र में जिले द्वारा देश और राज्य की तुलना में कि गई प्रगति को निम्नांकित ग्राफ के माध्यम से सरलता पूर्वक समझा जा सकता है।

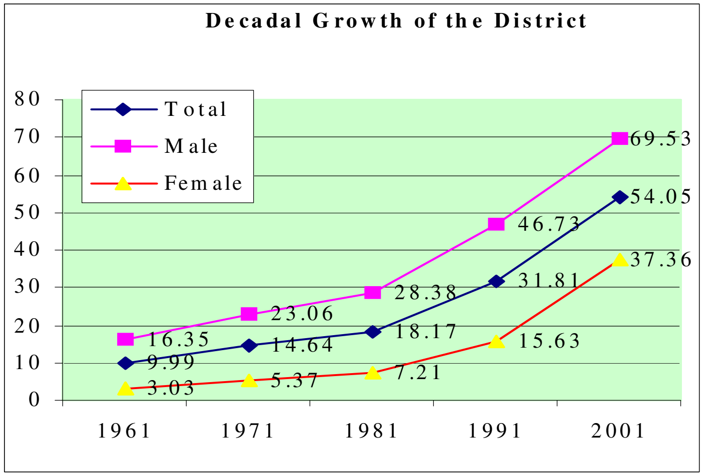

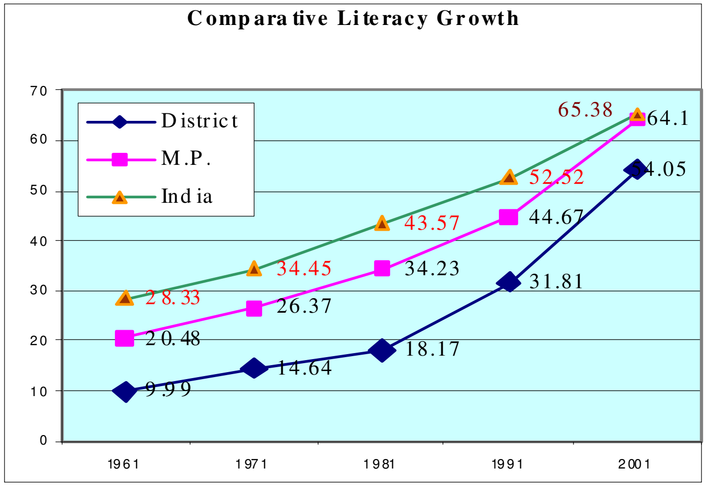

जिले में शैक्षणिक संस्थाओं की स्थितिः

विकासखंड	प्राथमिक शाला		उन्नयित	माध्यमिक शाला		हाई स्कुल		हायर सेकंडरी स्कुल		महाविद्यालय	
	शासकीय	निजी	ई.जी.एस	शासकीय	निजी	शासकीय	निजी	शासकीय	निजी	शासकीय	निजी
ब्यावरा	309	28	83	110	18	14	02	06	03	01	01
खिलचीपुर	319	35	146	100	15	11	00	05	02	01	0
नरसिंहगढ	386	85	90	154	73	22	02	09	04	01	0
राजगढ़	369	18	148	121	6	10	01	08	05	02	0
सारंगपुर	235	72	28	115	37	14	03	09	03	02	0
जीरापुर	273	32	98	90	24	09	01	07	02	01	0
योग	**1891**	**270**	**593**	**690**	**173**	**80**	**09**	**44**	**19**	**08**	**1**

स्वास्थ्यः– स्वास्थ्य मानव विकास का एक प्रमुख घटक है। जहाँ तक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अद्योसंरचनात्मक विकास की बात की जावे तो वह राज्य के औसत से लगभग समान ही है। परन्तु हाल में जारी हुए DLHS-III के आंकडो के आधार पर स्वास्थ्य के संकेतको में सुधार के लिये राजगढ़ जिले में अपार संभावनाए दृष्टिगोचर होती है। टीकाकरण जो कि बाल स्वास्थ्य से सम्बंधित मुख्य संकेतक है DLHS-III के अनुसार मात्र 26.4% बच्चे पूर्ण टीकाकृत है जो की राज्य के औसत 36.2% से काफी कम है। इसी प्रकार मात्र 18.7% बच्चे ही ***केवल मातृ दुग्धपान*** (Exclusive Breast Feeding) कराये गये जिसका मुख्य कारण दुग्धपान के संबंध में जन जागरूकता का अभाव होना है। डायरिया की स्थिति में जीवन रक्षक घोल से उपचारित बच्चो की स्थिति में 30.6% DLHS-II के विरूद्ध 23.6% DLSH-III में गिरावट दर्ज की गई है। महिला एंव बाल विकास विभाग के प्रतिवेदन से ज्ञात होता है कि जिले में बाल पोषण की स्थिति राज्य की भांति दयनीय होकर जिले के 6 वर्ष से कम आयु वर्ग के लगभग 50 प्रतिशत बच्चे कुपोषित है जो कि राज्य में उच्च बाल मृत्यु दर का प्रमुख कारण है।

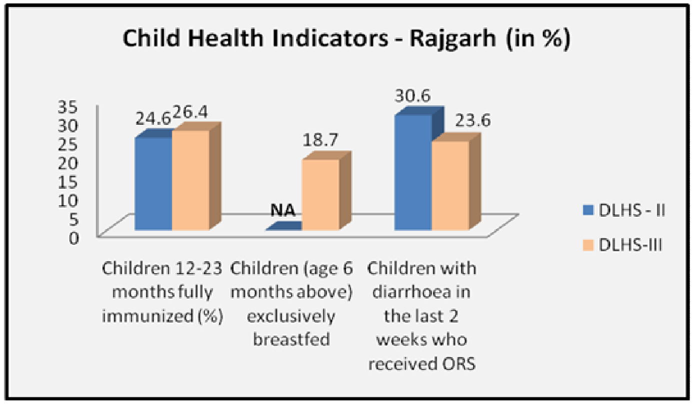

मातृ स्वास्थ्य के सम्बंध में प्रसव पूर्व जॉच का प्रतिशत 39.5% DLHS-II से बढ़ कर 41.1% DLSH-III हुआ है परंतु गर्भवस्था के दौरान T.T इन्जेक्शन लगवाने वाली गर्भवती महिलाओ की स्थिति मे गिरावट आई है। संस्थागत प्रसव के क्षेत्र में राजगढ़ जिले ने सुधार करते हुए राज्य के औसत 47.1% DLHS-III को पार करते हुए 50% के आंकडे को छू लिया है। इसी प्रकार प्रसव उपरांत जांच में जिला राज्य के औसत 40.3% के समकक्ष है। इस स्थिति में पहूचने मे मुख्य रूप से जननी सुरक्षा और जननी एक्सप्रेस योजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

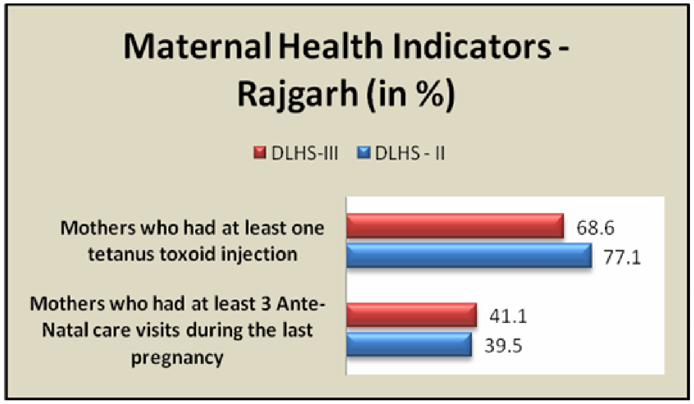

जनसंख्या स्थिरीकरण के क्षेत्र में राजगढ़ जिले को ज्यादा ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है जिस प्रकार परिवार नियोजन के किसी भी साधन के उपयोग में 48.2% DLHS-II से DLHS-III में लगभग 2% की गिरावट आई है जबकि राज्य का औसत 56.2% पर पहुंच गया है। परिवार नियोजन साधनो की Unmet Need 20.5% DLHS-II से 24.1% DLHS-III में बढी है। जबकि राज्य का औसत 19.3% (DLHS-III) रहा है।

उपरोक्त सभी तथ्यो का कारक–कारण विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिले में स्वास्थ्य संबंधी अधोसंरचना का विकास तो हुआ है लेकिन पर्याप्त मानव संसाधन उपलब्ध नही हो पाने के कारण गुणवत्ता पूर्ण सेवा प्रदाय सुनिश्चित नही किया जा सका है। वही जिले में व्याप्त अशिक्षा, गरीबी, बालविवाह आदि जिले के स्वास्थ्य के क्षेत्र में पिछडेपन के लिये प्रमुख जिम्मेवार कारक है।

कृषिः–जिला राजगढ़ का मुख्य व्यवसाय कृषि कार्य है जो इससे भी प्रमाणित होता है कि कुल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 82 प्रतिशत कृषि तथा उससे जुडे व्यवसाय पर निर्भर है। जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्र में शुद्ध बोये गये क्षेत्र का प्रतिशत जिले के लिए 67.21 है जो राज्य औसत 48.31 प्रतिशत से काफी ज्यादा है। यही कारण है कि प्रति व्यक्ति शुद्ध एवं कुल बोया गया क्षेत्र भी जिले की राज्य औसत से अधिक है। द्विफसली क्षैत्र का कुल बोये गये क्षैत्रफल से प्रतिशत भी जिला और प्रदेश का प्रायः समरूप है। सिंचाई के संदर्भ में कुल सिंचित क्षैत्र का कुल बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत जिले के लिए 32.21 है जो राज्य औसत 25.72 प्रतिशत से अधिक है। प्रायः अधिकांश कृषि संकेतकों में राज्य की तुलना में अग्रणी स्थिति होने के बाबजूद भी सभी प्रतिवेदित फसलों का प्रति हेक्टर उत्पादन जिले का राज्य औसत से कम है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण जिले की जमीन का कटाव एवं कम गुणवत्त की मिटटी का होना है। जिला राजगढ़ मे वन आच्छादन नगण्य है जिसके फलस्वरूप भू–क्षरण यहाँ की एक मुख्य समस्या है।

संक्षेप में यह उल्लेखनीय है कि प्रति हेक्टर उत्पादन के परिप्रेक्ष्य में जिला राजगढ़ राज्य की तुलना में काफी पिछडा है। जिले का मुख्य व्यवसाय कृषि है अतः आजीविका के विकास के संदर्भ में कृषि क्षैत्रक का विकसित होना नितान्त आवश्यक है। सिंचाई के साधनों में वृद्धि एवं बृहद् पैमाने में वनीकरण कृषि कार्य के विकास में सहायक हो सकता है। अतः कृषि कार्य में विकास की उचित व्यूह रचना जिले की खुशहाली का एक मुख्य स्रोत बन सकता है।

वनः– प्राकृतिक संसाधनों को देखें तो यह साफ होता है कि जिले में जंगल नाम मात्र को है और बहुत ज्यादा खनिज भी नही होते है, अतः जिले में मुख्य रूप से जमीन और जल है जिन्हें हम प्राकृतिक संसाधन के रूप में गिन सकते है। प्राकृतिक संसाधनों की वर्तमान स्थिति के आधार पर जिला राजगढ़ तीन हिस्सों में स्पष्ट रूप से बटता है। पहला हिस्सा है बेहतर वन युक्त क्षैत्र जिसमें नरसिंहगढ़ विकास खण्ड आता है। दूसरा हिस्सा है बेहतर कृषि वाला क्षेत्र जिसमें ब्यावरा और सारंगपुर विकास खण्ड आते है। तीसरा क्षेत्र वन विहीन ओर लगभग वृक्ष विहीन क्षेत्र जिसमें राजगढ़, खिलचीपुर, और जीरापुर आता है।

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्र का 233.1 वर्ग किमी वन क्षेत्र के रूप में अंकित है। जो भौगोलिक क्षेत्र फल का 3.78 प्रतिशत है। राजगढ़ जिले में मात्र 2 वनग्राम है जबकि मध्य प्रदेश राज्य के लगभग 40 प्रतिशत गांव या तो वन ग्राम क्षेणी में आते है या सघन वनो के आस पास बसे है ऐसे गांवो में लोगो की आमदनी में वनों की विशष भूमिका है। अतः तुलनात्मक रूप से जिले में वन ग्राम या वन के आस पास के ग्राम नगण्य है। राजगढ़ में वनोपज के नाम पर केवल तेंदूपत्ता ही पाया जाता है जिसका उत्पादन वर्ष में 8818 क्विंटल रहा। जिले के नरसिंहगढ़ विकासखण्ड में स्थित चिड़ीखो वन अभ्यारण्य जिले में एक प्राकृतिक दर्शनीय स्थल है।

सिंचाईः— राजगढ़ जिले में जल प्रबंधन की बडी जरूरत सिंचाई और खेती के उत्पादन से जुडी है। जिले में सिंचाई के मुख्य स्रोत कुएं है जिसके द्वारा सिंचित क्षेत्र का शुद्ध बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत जिले के लिए 29.22 है। विकास खण्ड नरसिंहगढ़, ब्यावरा एवं सारंगपुर में यह प्रतिशत जिला औसत 29.22 प्रतिशत से अधिक है। सिंचाई स्रोत के रूप में नलकूप का द्वितीय स्थान है जहा नलकूप द्वारा सिंचित क्षेत्र का शुद्ध बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत जिले के लिए 7.34 है। शेष स्रोतों तथा नहर एवं तालाबों द्वारा सिंचाई जिले में नाम मात्र का होता है। राजगढ़ जिले मे सिर्फ तीन विकास खण्डों में ही सिंचाई के वृहद बांध है जिनकी कुल संख्या 23 है जिनमें राजगढ़ 13 बांध, ब्यावरा 6 बांध तथा नरसिंहगढ़ 4 बांध में है।

सडक एवं संचारः— यातायात एवं संचार किसी भी क्षेत्र के विकास को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण घटक है। यातायात की दृष्टि से राजगढ़ जिले में पक्की सडको की लम्बाई (प्रति सौ वर्ग कि.मी.) 17 कि.मी. है जो राज्य के औसत (18.7) से थोडा ही कम है। वही जिले में कुल सडको की लम्बाई (प्रति सौ वर्ग कि.मी.) 18.1 कि.मी. है। जबकि प्रदेश में 22.1 कि.मी. है। स्पष्ट है कि भौगोलिक क्षेत्र की दृष्टि से राजगढ़ जिला सडको की लम्बाई की दृष्टि से विकसित जिला है। संचार के संकेताको में राजगढ़ जिला प्रदेश के अधिकांश संकेताको से पिछडा हुआ है। जो निम्नाकित तालिका से स्पष्ट है। हाल ही के वर्षो में संचार के क्षेत्र में निजी कंपनीयो के आने से देश में जिस तरह मोबाईल उपयोगकर्ताओ की संख्या में बढोतरी हुई है राजगढ़ जिला इसका अपवाद नही है।

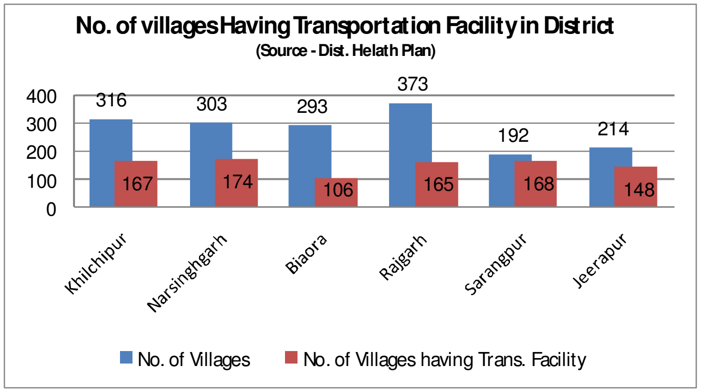

मद	मध्यप्रदेश	राजगढ़
प्रति हजार जनसंख्या पर पंजीकृत वाहनो की संख्या	51	21
प्रति टेलीफोन केंद्रो पर टेलीफोन कनेक्शन की संख्या	427	261
प्रति लाख जनसंख्या पर टेलीफोन कनेक्शनो की संख्या	1852	1120

बिजलीः— राजगढ़ जिले के 100 प्रतिशत आबाद ग्राम विद्युतिकृत है। जिले का प्रति व्यक्ति विद्युत उपभोग राज्य के और से काफी कम है (मध्यप्रदेश 237, राजगढ़ 175) परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में जिले का (153) राज्य (138) से ज्यादा है। जिले में बिजली की मुख्य खपत लगभग 80 प्रतिशत कृषि हेतु होती है। उसके पश्चात 14.98 प्रतिशत घरेलु उपभोग होता है। जिले में औद्योगिक पिछडेपन के कारण विद्युत का औद्योगिक उपभोग नाम मा? (1.86 प्रतिशत) है।

पेयजल एवं स्वच्छताः— जिले में पेयजल की स्थिति विगत 5–6 वर्षो में हुई अल्पवर्षा के कारण विकट हुई है और जिले के कई ग्रामो में स्थायी पेयजल स्रोत के अभाव में परिवहन द्वारा पेयजल उपलब्ध करवाने के हालात बने है। म.प्र. शासन की मंशा के अनुरूप जिला प्रशासन द्वारा जिले में उपलब्ध जल संसाधन (नदियों एवं तालाबो) के रखरखाव और उचित जल उपभोग के उपाये निरंतर किये जा रहे है ताकि ग्रीष्म ऋतु में पेयजल संकट से बचा जा सके। जिले में 590 ग्रामो को सुरक्षित पीने के पानी के स्रोत विहिन ग्राम के रूप मे चिन्हित किया गया है। जिले की कुल बसावटो 2223 में से मात्र 1401 पूर्ण आवेष्ठित और 792 आंशिक आवेष्ठित बसावटे है। जिनमें से 30 बसावटो को सुविधा विहीन के रूप में चिन्हित किया गया है। एक सर्वेक्षण के अनुसार 44 प्रतिशत ग्रामों में पानी की व्यवस्था ठीक नही है। जबकि 61 प्रतिशत ग्रामो में हेंडपंप है जिसमें से 580 प्रतिशत ही चालू हालत में है।

बैकिंगः— जिले में 251 वित्तीय संस्थाए है जिनमें व्यवसायिक बैंक 35, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक 38, कोआपरेटिव बैंक 38, और 140 प्राथमिक बचत संस्थाए है। इसके अतिरिक्त हाल ही के वर्षो में ग्रामीण क्षेत्र में बैंकिग व्यवसाय के अवसर के आधार पर निजी बैंको की शाखाए खुलने का सिलसिला शुरू हो गया है।

संस्थाएः—राजगढ़ जिले में पिछले दो दशको में सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक परिपेक्ष्य में संस्थागत संरचनाओ के प्रभाव से काफी बदलाव अनुभव किया गया है। राजगढ़ जिले में अनौपचारिक संस्थाओ के रूप में जातिगत संस्थाए, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थाए है जो धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों का संचालन करती संस्थाए है। इन संस्थाओं में ग्रामीण एवं शहरी दोनो ही क्षेत्रो में स्थानीय स्तर पर महिला मण्डल, युवक मण्डल, भजन मण्डली, सांस्कृतिक मण्डली, खेलकुद मण्डल और विकास मण्डल के रूप में यह संस्थाए विभिन्न अवसरो पर सामाजिक आयोजन करती है, सांस्कृतिक कार्यक्रम के अलावा यह संस्थाए आर्थिक, एवं धार्मिक गतिविधिया करते हुए विकास और बदलाव में अपनी भूमिका निभाती है। संस्थाएं, शैक्षणिक संस्थाओं के रूप में समाज में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न शासकीय विभागो द्वारा गठित स्वयं सहायता समूहो के रूप में जिले में लगभग 6000 समूहो का गठन किया गया है। जिनमें से 3009 समूहो द्वारा प्रथम ग्रेडिग उत्तीर्ण है। 781 समूहो को अब तक स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना के माध्यम से वित्तीय सहायता उपलब्ध करवायी गई है। जिले में क्रियांवित किये जा रहे डी.पी.आई.पी. कार्यक्रम के अन्तर्गत ग्रामीणजनो के समूहो में गठित कर क्षमतार्वधन एवं रोजगारोन्मूलक गतिविधियों से जुडाव किया जा रहा है। इसके अतिरिक्ति जिले में 157 सहकारी संस्थाए है। इन समितियो के माध्यम से योजनाओ और कार्यक्रम के क्रियान्वयन में मदद मिलती है। इस समितियों में दुग्ध समिति, मत्स्य समिति, आदि प्रमुख है जिनसे जुडकर लोग आर्थिक रूप से लाभान्वित हो रहे है। राजगढ़ जिले में 11 कृषि मण्डियो की उपलब्धता भी कृषको को अपने उत्पादो को बेचने के लिये बाजार उपलब्ध करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है।

स्वैच्छिक संस्थाएः—राजगढ़ जिले में लगभग 140 स्वैच्छिक संस्थाए कार्य कर रही है इन संस्थाओ में 70—80 प्रतिशत संस्थाए केवल शैक्षणिक क्षेत्र में कार्यरत है। अन्य संस्थाए ग्रामीण विकास विभाग व अन्य विभागो द्वारा क्रियांन्वित कार्यक्रमो के क्रियान्वयन के साथ—साथ विकास कार्यो मे प्रेरक की भूमिका निभाते है।

1.3 जिले का ब्लाकवार मानचित्रः–

Total Literacy Rate (Age 7+)
MP – 63.7%
Rajgarh – 53.7%

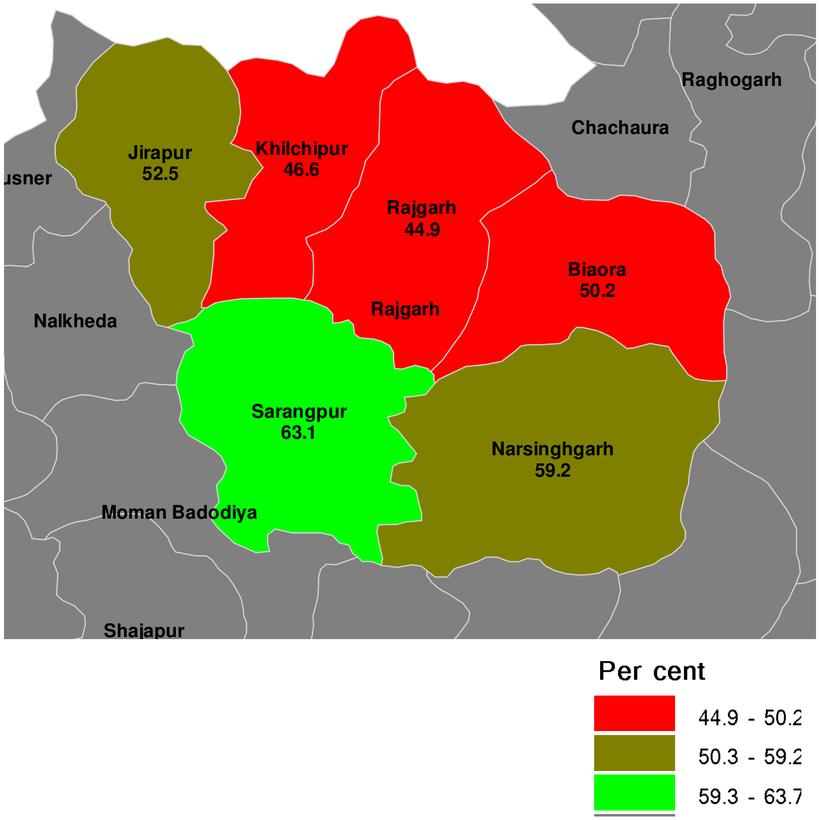

Gender Gap in Literacy
MP – 25.8
Rajgarh – 32.0

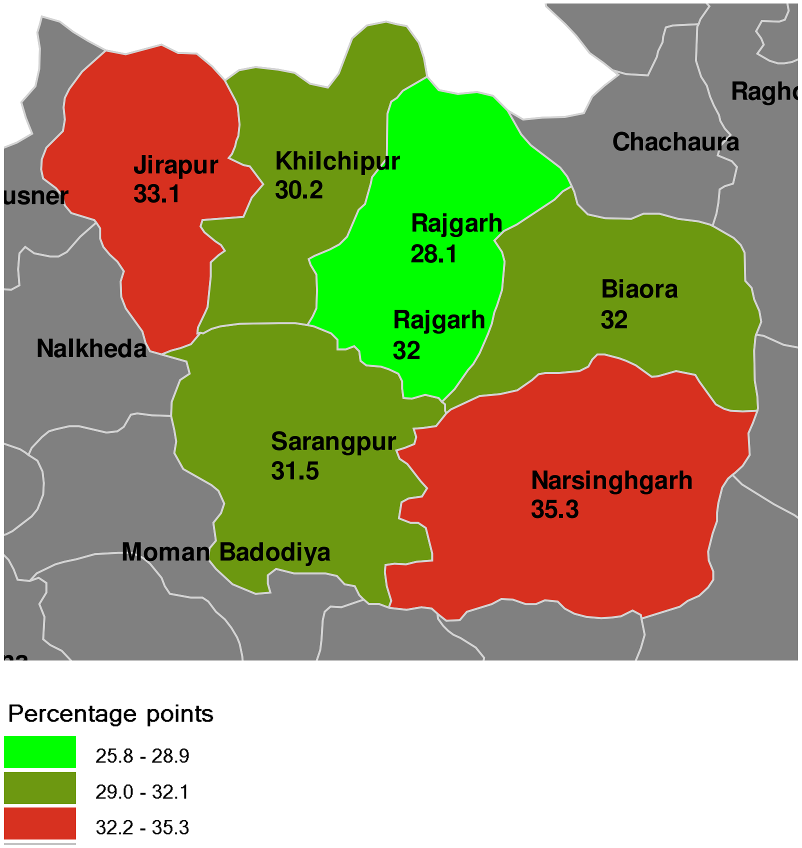

Census 2001

Sex Ratio Total
MP – 919
Rajgarh – 932

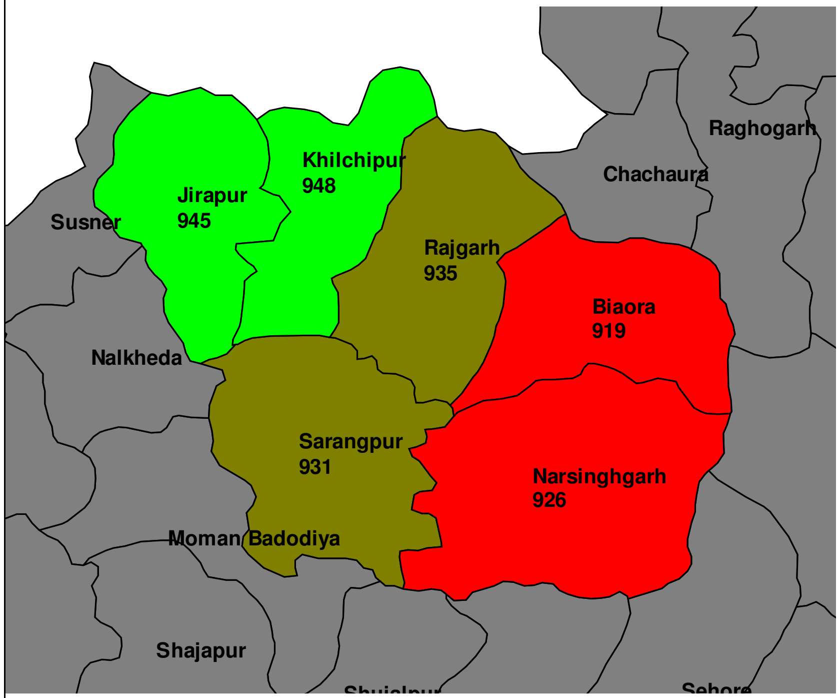

Sex Ratio Total (Below 6years)
MP – 932
Rajgarh – 938

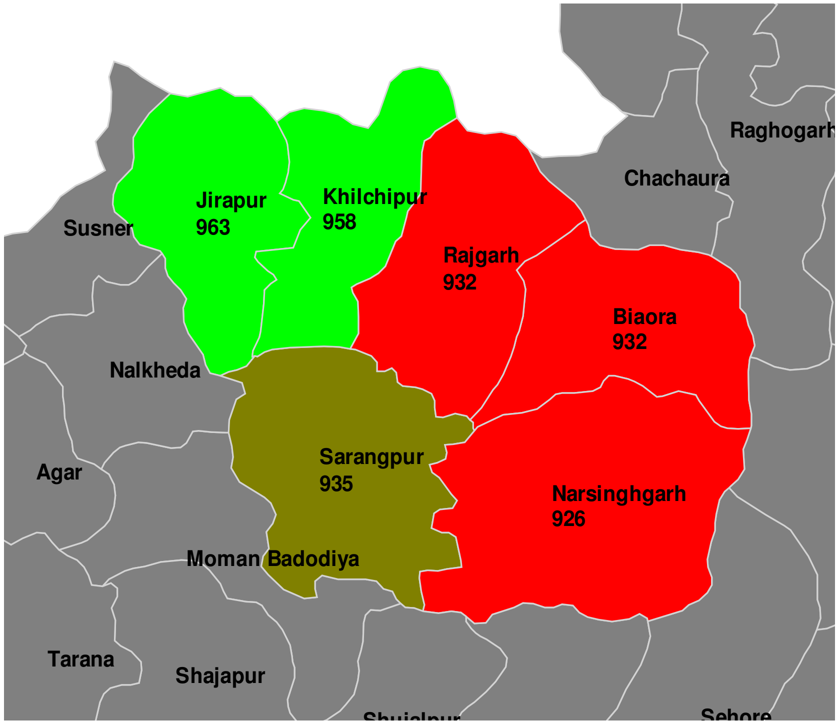

919 - 933
934 - 948
949 - 963

Census 2001

Proportion of House Hold by Type of Latrine- No Latrine
MP – 76%
Rajgarh – 83.7%

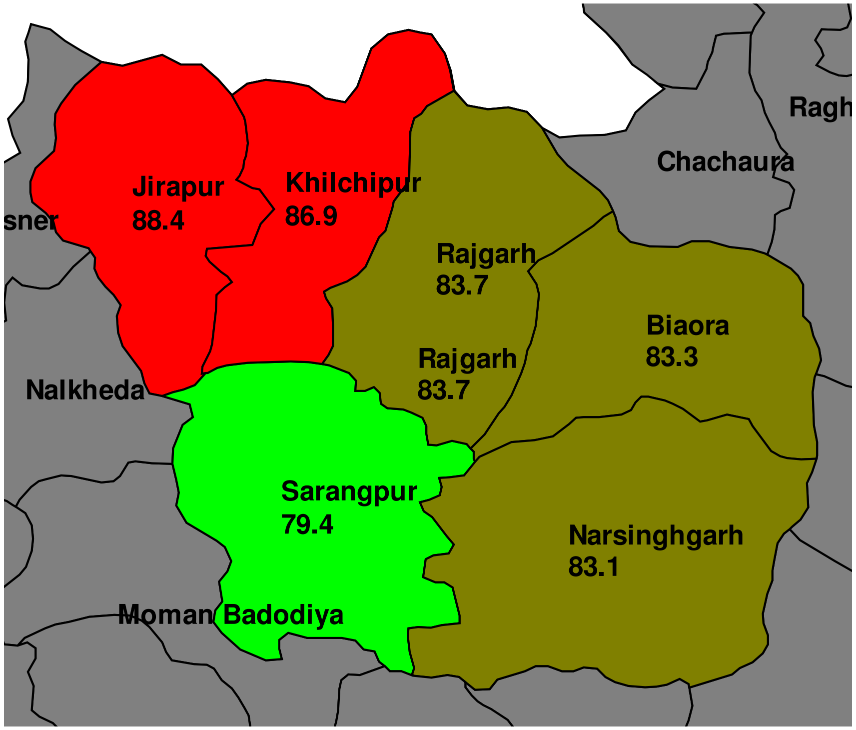

Per cent

76.0 - 80.1

80.2 - 84.3

84.4 - 88.4

Proportion of House Hold with Dirning Water Sources Out side the Premises
MP – 76.4%
Rajgarh – 88.2%

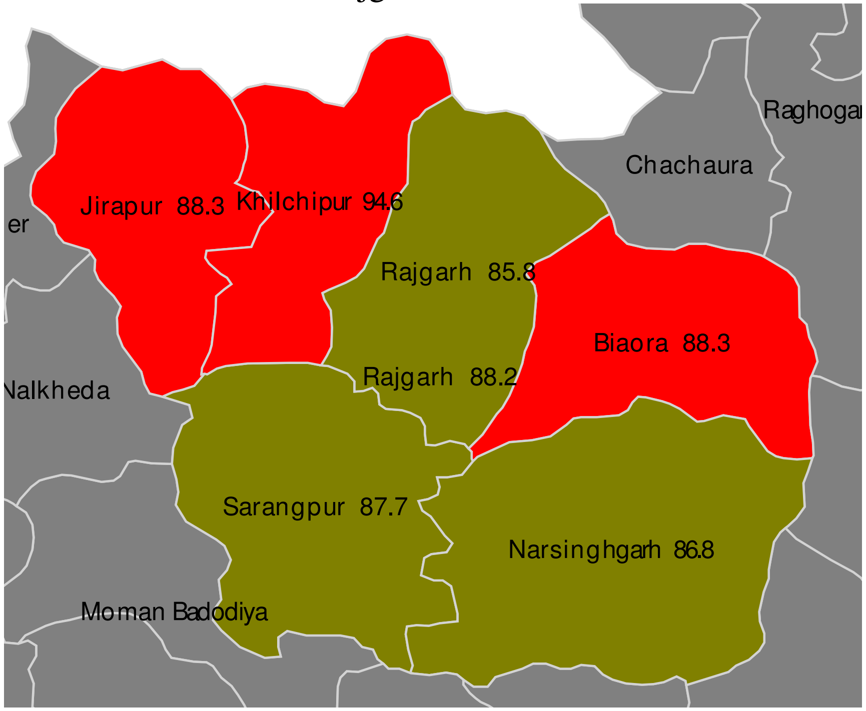

Census 2001

Per cent

75.4 - 81.7

81.8 - 88.1

88.2 - 94.6